हम आपके घर में रहते हैं

यह खबर पढ़कर आपको शायद अचरज होगा कि अमेरिका के घरों में भी तमाम किस्म के कीड़े-मकोड़े निवास करते हैं क्योंकि भारत में तो हम अपने घरों में इन सबको अपने संयुक्त परिवार का हिस्सा ही मानते हैं।

हाल ही में उत्तरी केरोलिना के एक हरे-भरे उपनगर रेले में दूर-दूर स्थित 50 घरों के एक सर्वेक्षण में प्रत्येक घर में 100 प्रजातियों के कीड़े-मकोड़े पाए गए। ये सभी जंतु जगत के संधिपाद यानी आर्थ्रोपोडा वर्ग के सदस्य थे। सर्वेक्षण में कुल मिलाकर 579 प्रजातियों की पहचान हुई जो घरों में हमारे साथ बसेरा करती हैं। इन घरों के निवासियों (यानी मनुष्य निवासियों) की आंखें फटी की फटी रह गईं जब उन्हें पता चला कि उनके साफ-सुथरे घर में ये सारे जंतु विचरते हैं।

इस सर्वेक्षण का नेतृत्व करने वाले नॉर्थ केरोलिना विश्वविद्यालय के मैट बर्टोन का कहना है कि उनके सर्वेक्षण से एक बात तो साफ है कि हमारे आधुनिक घर कोई निर्जीव मरुस्थल नहीं है। आश्चर्य की बात यह थी कि जिन 554 कमरों की जांच-पड़ताल की गई उनमें से मात्र 5 कमरे ऐसे निकले जिनमें कोई जंतु नहीं पाया गया, शेष सभी कमरों में कम से कम एक प्रजाति तो अवश्य मिली।

बर्टोन के मुताबिक जो प्रजातियां इन घरों में सबसे ज़्यादा बार देखी गईं वे वही हैं जो दुनिया भर में सबसे अधिक पाई जाती हैं। ये आर्थ्रोपोड्स कालीनों से लेकर फर्नीचर की दरारों से लेकर बिस्तरों तक में पाए गए। चींटियां, कार्पेट बीटल्स, जाले बनाने वाली मकड़ियां और गाल मिजेस सारे घरों में पाए गए। हालांकि कॉकरोच और खटमल एक भी घर में नहीं मिले।

अध्ययन दल का कहना है कि इनमें से कई जंतु तो घरों के स्थायी निवासी हैं जबकि कुछ अतिथि हैं और कुछ हैं जो मजबूरी में यहां कैद हो गए हैं। और ये सब मिलकर एक बढ़िया इकोसिस्टम बनाते हैं। मकड़ियां और गिंजाई (सेंटीपीड) जैसे जंतु सबसे बड़े शिकारी हैं। ये कार्पेट बीटल्स और अन्य मकड़ियों को मारकर खा जाते हैं। कार्पेट बीटल्स और किताबों में रहने वाली जूं साफ-सफाई का काम करती हैं - ये मरे हुए कीटों, शैवाल और फफूंद को तो चट करती ही हैं, हमारे कतरे हुए नाखूनों, झड़ते हुए बालों और त्वचा को साफ कर देते हैं। कुछ बीटल्स मकड़ी के जाले खाते हैं।

और इनमें से कई जंतुओं के शरीर में सूक्ष्मजीव पलते हैं। वे भी हमारे घरेलू जंगल का हिस्सा ही हैं। कुछ दिनों पहले घरेलू सूक्ष्मजीवों का एक सर्वेक्षण किया गया था जिसमें पता चला था कि घरों में सूक्ष्मजीवों की 9000 प्रजातियां पाई जाती हैं। तो आप अकेले नहीं हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***